B.A. PART-1
हिन्दी (प्रतिष्ठा) - प्रथम पत्र
हिन्दी साहित्य का इतिहास भाग-1

प्रश्न :- आदिकालीन साहित्य की परिस्थितियों या पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालें?

उत्तर :- जिस देश का जैसा समाज होगा वैसा ही उसका साहित्य होगा। समाज की परिस्थितों के साथ-साथ साहित्य परिवर्तित होता रहता है। हिन्दी के आदिकाल की परिस्थितियों का उसके साहित्य पर काफी प्रभाव पड़ा है। इस युग की राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं साहित्यिक परिस्थितियाँ निम्नलिखित हैं—

(क) राजनैतिक परिस्थितियाँ

भारतीय इतिहास का यह काल राजनीतिक की दृष्टि से अव्यवस्था, पराजय एवं गृहकलह का युग था।

1. सम्राट हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद उत्तरी भारत की केन्द्रीय शासन-शक्ति का ह्रास हो गया था और राजसत्ता आखिर हो गई थी। भारत छोटे-छोटे राज्यों में बँट गया था।
2. इसी समय अरब में नवोदित इस्लाम धर्म ने दूर-दूर तक प्रसार के लिए प्रयत्न आरम्भ कर दिए। मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में सिंध के राजा दाहिर को हराकर अरबों ने सिंध को जीत लिया। 9 वी शती तक भारत में वे प्रवेश न कर सके, क्योंकि पश्चिमोत्तर सीमा पर शक्तिशाली राज्य थे।
3. दसवीं शताब्दी में गजनी का राज्य महमूद गजनवी के हाथ में आया। उसने पंजाब, कांगड़ा, कन्नौज, ग्वालियर आदि को जीतते एवं लूटमार मचाते हुए सोमनाथ के मंदिर पर आक्रमण किया। गजनवी धन लूटता हुआ वापिस चला गया।
4. ग्यारहवीं - बारहवीं शताब्दी में दिल्ली में तोमर, अजमेर में चौहान तथा कन्नौज में गहड़वालों के शक्तिशाली राजपूत राज्य थे।
5. मुहम्मद गौरी ने भारत पर आक्रमण करके पृथ्वीराज चौहान तथा बाद में जयचन्द को पराजित करके

भारत में राज्य स्थापित किया। राजपूतों की पराजय का मुख्य कारण उनकी पारस्परिक फूट थी। इस प्रकार आदिकाल में भारत की राजनैतिक स्थिति गृहकलह से युक्त थी, फलतः भारत पर तुर्कों का राज्य स्थापित हो गया।

(ख) सामाजिक परिस्थितियाँ

1. इस युग में सामाजिक स्थिति भी उत्तम नहीं थी, वर्ण-व्यवस्था प्रधान हिन्दू-समाज अनेक जातियों तथा उपजातियों में बँट गया था। छूआछूत के नियम बड़े कड़े हो चुके थे। हिन्दुओं की समन्वयवादिता की भावना का ह्रास हो चुका था।
2. राजपूतों में वंशकुलीनता और सामन्ती-गौरव की भावना अधिक थी। उनकी वीरता और बलिदान की भावना में किसी को सन्देह नहीं हो सकता, परन्तु वंश-गौरव की भावना को लेकर वे गृह-कलह में ही उलझे रहते थे,
3. राजपूत नारियाँ वीर क्षत्राणियाँ थीं। वे जौहर में आत्मबलिदान करने और वीरता दिखाने में पीछे नहीं थीं।
4. स्वयँवर-प्रथा उस समय की सामाजिक विशेषता थी। कई बार स्वयँवर युद्ध का कारण बन जाते थे।
5. राजपूत दूरदर्शी नहीं थे, भोग-विलास में उनकी रुचि अधिक थी।
6. जन-सामान्य में मनोबल नहीं था।

तत्कालीन रासो-ग्रन्थों से उपर्युक्त सामाजिक अवस्था का यथार्थ चित्र मिलता है।

दिनांक - 19.01.2022

पता:-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग - हिन्दी (S.R.A.P.C.(B.R.A.B.U.M)
मो० न० - 7909046087